गांव के कहिनी
डा. प्रकाश पतंगीवार

सिंह के सेती नाव होइस सियादेही

त्रेता युग के गोठ आय। भगवान शंकर आऊ पार्वती दुनों झन दंडकारण्य में जावत रिहीन। इही जंगल में श्रीराम आऊ लक्ष्मण दुनो भाई सीता के खोज में भटकत रिहिन। शंकरजी हा देखलिस आऊ रामजी ल जोहार करिस। पार्वती ह सोच में परगे, मोर पति ह जगत के स्वामी आय, फेर काबर भगवान राम ला पयलगी करत हे। भोलेनाथ ह कीहिस येमन सधारण मनखे नोहय। तोला संका होवत हे त परीक्षा ले ले। पार्वती ह परीक्षा लिस श्रीराम के। तब समझ आईस कि ये मन महान हरे। इही कथा के प्रतीक के रूप में सियादेही बताय जाथे। नामकरण के दूसर कारण ये आय कि इहा जंगल के राजा शेर ला देवता के रूप में पूजे जाथे। किवंदती हावे कि माता के मंदिर में इहा सिंह ह माता के दर्शन करे बर आय। एकरे सेती ईहा सिंह द्वार बने हावय। अंग्रेज मन ईहा सिंह के शिकार करे बर आवत रहीन। आऊ ऐसने कतको किस्सा ये गांव के नाव के सुने बर मिलथे। ये गांव ला धार्मिक महत्व के जगा माने जाथे। ईहा बाघ मूर्ति, सियादेही प्रस्तर प्रतिमा, हनुमान मूर्ति, शिवलिंग, जलप्रपात, गुफा संग आऊ कतको महत्व के प्रमाण ए गांव में देखे बर मिल जथे। बछर भर गांव में कोनो न कोनो धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन होवत रिथे।

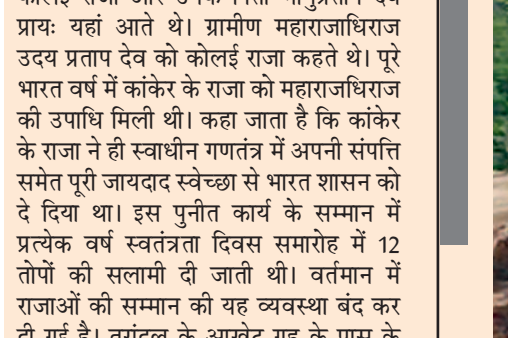

राजकीय व्यवस्था में राजाओं ने बस्तर के अनेक सुरम्य वनांचलों में आखेट गृह का निर्माण कराया था, जहां वे ग्रीष्मावकाश में आखेट के साथ साथ कुछ समय वनों में व्यतीत करते थे। पहाड़ों पर ज्ञात जल स्त्रोत के उपलब्धता के आधार पर उक्त स्थल पर आखेट गृह का निर्माण होता था। वातानुकूल इस स्थलों की विशेषता होती थी, ग्रीष्म काल में भी ठंडकता बनी रहती थी।

वनांचल में आज भी मौजूद राजघराना के आखेट गृह

कांकेर के राजा भानुप्रताप देव व उदय प्रताप देव के काल में ग्राम तरांदुल वि. ख. भानुप्रतापपुर के पहाड़ में आखेट गृह बना हुआ है, जो वर्तमान में संरक्षण के अभाव में खंडहर हो गया है। इस आखेट गृह को गर्म रखने के लिए एक पृथक कमरा है, जहां विशाल चिमनी बनी है। कमरे में आग जलाने के लिए अर्ध गोलाकार खंड बना है। यह दीवाल के सहारे ऊपर ताप के लिए रिक्त स्थान छोड़ता हुआ कमरे के ऊपर उठ कर चिमनी बना है, जहां से धुंआ बाहर निकल जाता था। इसी वास्तुनुरूप बस्तर राजा प्रवीरचंद भजदेव द्वारा बेलाडीला के पर्वत श्रृंखला में ' राजा बंगला ' नाम से आखेट गृह बना था उसके चिमनी में 1925 लिखा था। दोनों आखेट गृह का वास्तु एक ही शैली में है।

ग्रामीणों के अनुसार इस आखेट गृह में कोलई राजा और उनके पिता भानुप्रताप देव प्रायः यहां आते थे। ग्रामीण महाराजाधिराज उदय प्रताप देव को कोलई राजा कहते थे। पूरे भारत वर्ष में कांकेर के राजा को महाराजधिराज की उपाधि मिली थी। कहा जाता है कि कांकेर के राजा ने ही स्वाधीन गणतंत्र में अपनी संपत्ति समेत पूरी जायदाद स्वेच्छा से भारत शासन को दे दिया था। इस पुनीत कार्य के सम्मान में प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस समारोह में 12 तोपों की सलामी दी जाती थी। वर्तमान में राजाओं की सम्मान की यह व्यवस्था बंद कर दी गई है। तरांदुल के आखेट गृह के पास के एक बगीचा के मध्य लगभग 250 वर्ष पुराना बरगद का विशाल वृक्ष आज भी मौजूद है। आसपास छिंद वृक्षों का सुंदर समूह है। इस वृक्ष के निकट आखेट गृह के ईट व टीले के भग्नावशेष बिखरे पड़े हैं।

धरोहरः दिनेश वर्मा

कलाकृति
डा. अर्चना पाठक

देवबलोदा के मंदिर में सांगीतिक शिल्पांकन

छत्तीसगढ़ में भिलाई के चरोदा स्थित प्राचीन शिव मंदिर में सांगीतिक शिल्पांकन के उकेरे गए चित्र अंचल में संगीत के प्रभाव को दर्शाते हैं। इस मंदिर की दीवार में और स्तंभ में वीणा वादन का दृश्य, वेणु वादन करते हुए श्रीकृष्ण, मृदंग वादन करते हुए वीणा वादिका, एवं नृत्य मुद्रा में नर्तकी के शिल्प प्रदर्शित हैं। अन्य शिल्पंक संगीत की विभिन्न विधाओं को प्रदर्शित करते हुए विद्यमान हैं। यहां लोक नृत्य रिलो का सजीव चित्रांकन भी किया गया है। लोक वाद्य तुरही और टिमकी का वादन करते दृश्य देखे जा सकते हैं। लोक में संगीत की स्थिति दर्शाने वाली कला कृति भी उकेरी गई हैं। उपरोक्त सभी दृश्यों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि इस क्षेत्र के तत्कालीन शासन काल में राजा एवं प्रजा दोनों में संगीत के प्रति प्रर्याप्त सम्मान और लगाव था।

छत्तीसगढ़ के मनेंद्रगढ़ से 150 कि मी की दूरी पर बैकुंठपुर, कठौतिया, चुटकी और भंवरदाह होते हुए जनकपुर या रमदहा जलप्रपात पहुंचा जाता है। बरसात के दिनों में यहां का मनमोहक वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।बनास नदी पर चारों ओर पहाड़ तथा जंगल से घिरा इस सुंदर प्राकृतिक वातावरण में गर्मियों के दिनों में भी पर्याप्त पानी और ठंडी हवा बहती है।

बरसात में पर्यटकों का मन मोह लेता रमदहा जनकपुर जलप्रपात

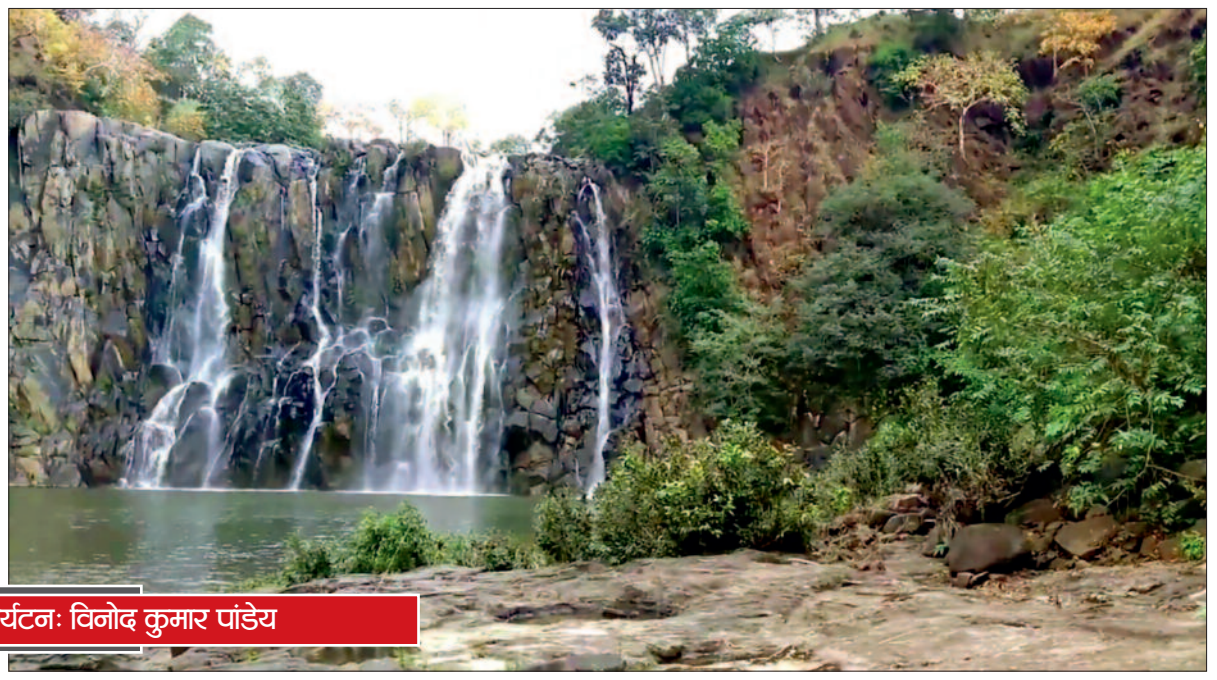

पर्यटनः विनोद कुमार पांडेय

यह जलप्रपात अपने प्रपात, सुंदर जंगल, मुरेरगढ़, बनास नदी व पुरातात्विक अवशेष होने की वजह से प्रसिद्ध है। काले चट्टानों से घिरा यह पर्वत जिसमें पानी रिसकर तथा प्रपात के रूप में लगभग 70 फीट की ऊंचाई से पानी गिरता है तथा एक बड़े तालाब में एकत्र होकर पत्थरों से होता हुआ आगे बढ़ता है। इतनी ऊंचाई से गिरते जल की ध्वनि किसी मधुर संगीत के धुन के समान प्रिय लगती है। पहाड़ के उप्पर जहां से बनास नदी का पानी गिरता है बरसात के दिनों में देखने में बहुत अच्छा लगता है। यहां एक किनारे प्राचीन शिव मंदिर है। इस स्थल तक कच्चा रास्ता से होकर पहुंचा जाता है, जिससे पर्यटकों को पहुंचने में थोड़ी कठिनाई होती है।

लोक साहित्य
डा. सुधीर पाठक

अंचल में लोक गीतों की परम्परा

अन्य अंचलों की तरह छत्तीसगढ़ में भी लोकगीत दो प्रकार के होते हैं -प्रथम साहित्यिक गीत और दूसरा लोकगीत। साहित्यिक गीत में साहित्यिक भावना प्रधान होती है और साहित्यकार उसे गाकर सुनाता है इसलिए उसे गीतकार भी कहते हैं। गीतकार कवि की एक लय होती है, उस लय से जब गीतकार कवि अपनी कविता को सुनाता है, तो श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। साहित्यिक गीतकार का साहित्यिक मंच होता है पर लोकगीत की अपनी विशेषता होती है जो सामान्य नर नारी के कंठ में समाहित रहता है। हर अंचल का लोकगीत होता है जिसे ग्रामीण अंचल के नर नारी विशेष अवसर पर खासकर मांगलिक कार्यों में गायन करते हैं।

लोकगीत अनाम होते हैं। इसमें कोई रचयिता नहीं होते। लोकगीतों में ग्रामीण जनों के सरल जीवन की छाप रहती है। यहां तक संस्कार, व्रत त्योहार, देवी देवताओं का चित्रण तथा दैनिक जीवन के क्रियाकलाप चित्रित रहते हैं। लोकगीत में भाषा के माध्यम से आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति तो होती ही है, साथ ही साथ क्षेत्रीय परंपरा का पुट भी रहता है। गीत तथा परिस्थितियों का जीवंत स्वरूप रहता है। लोकगीत किसी भी क्षेत्र के हों और किसी भी क्षेत्रीय भाषा के हों, उनमें मधुरता,लय व स्वर लहरों का जो समावेश होता है वह अपने ढंग का होता है, यही उसकी विशेषता है। इसकी दूसरी विशेषता परंपरा व श्रृंखला है जो अतीत से वर्तमान को जोड़ती है। लोकगीत का कोई इतिहास नहीं है वह एक कंठ से दूसरे कंठ में स्वाभाविक रूप से उतरता हुआ आ रहा है।

पुस्तक समीक्षा

छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और रामकथा

कृति के नाव
छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और रामकथा

लेखक
डॉ पी सी लाल यादव

प्रकाशक
गौरव प्रकाशन रायपुर

पुस्तक समीक्षा
डा. डी पी देशमुख

मूल्य
चार सौ पचास रुपए

छत्तीसगढ़ के जन मानस में भगवान राम के प्रति अगाध श्रद्धा है जो हमें राम कथा में देखने को मिलती है। किसी भी मांगलिक कार्यों में परिवार जन रामायण का आयोजन कर अपने को धन्य मानते हैं। इतना ही नहीं यहां के कला प्रेमी, साहित्यकार और आम जन भी भगवान राम को अपना आदर्श मानते हैं। यह इस पुस्तक से प्रमाणित होता है। लेखक ने अपनी पुस्तक ' छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और रामकथा ' में राम की महिमा को 25 खंडों में विभाजित कर जन समक्ष रखा है जैसे लोक व्यवहार में राम, लोक गाथा में राम, विवाह गीत में राम। इस पुस्तक से भगवान राम से संबंधित जानकारी से पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे।

चिन्हारी
कमलेश यादव

अब नई दिखय कुंदरा

पहली के बेरा में जगा जगा हमन ल कुंदरा देखे बर मिल जावत रिहिस हे। कुंदरा ह एक किस्म ले अस्थाई घर के स्वरूप रिहिस। जे मन घूम घूम के अपन जीवन यापन करत रहीन वोमन रहवासी जगा ल छोड़के मैदान मन म कुंदरा बनाके रहत रिहिन।

पहली खासकर देवार, शिकारी, बनसोड, बसदेवा जइसे यायावरी जाति मन खाय कमाय बर एक गांव ले दूसर गांव, एक शहर ले दूसर शहर जावत रिहीन तब उनकर निवास कुंदरा रहय। ए मन जादा कर बेंदरा आऊ सुरा पाले। ए मन कुंदरा बनाय बर सनडईल काडी, कमचिल, कांदी या वो जगा जेन सरलता ले मिल जाय वोकर उपयोग करत रिहिन। पहली बिजली नी रीहिस त ए मन कंडील, ढीबरी आऊ चिमनी के उपयोग करत रिहिन। एक जगा कुछ दिन या महीना रहे के बाद दूसर जगा जाके बसेरा करत रिहिन। बेंदरा नचा के, डगचगहा के खेल देखा के लोगन मन के मनोरंजन करत रिहिन हे। इही इकर बेवसाय रिहिस। दिन भर घूमय आऊ सांझ के डेरा मा आवत रिहीन। खाय पीए के बर्तन भाड़ा घलो कमती रखत रिहीन। रांधे बर तीर तखार ले लकड़ी बिन के लान लेत रहीन।आजकल ये जाति मन के बेवसाय बदल गेहे, खाली मैदान के घलो कमी हो गए हे त कुंदरा अब देखे बर नी मिलय। ये जाति के मन पढ़ लिख के जागरूक घलो होवत हे, त कुंदरा के लुप्त होना स्वाभाविक हे। अभी घलो कुंदरा एकदम पिछड़ा अंचल में देखे जा सकत हे। फेर अतका हे आने वाला बेरा में हर समाज के तरक्की के सेती कुंदरा देखे बर नी मिलय।